नस्य खंडं सोहा जाम नथे। एवंयरं पनाहु तीए
तोडखाल्ल॥ ॥किं तपूर्व्वकृतो॥ ॥थना डंग मान
सानवीयके। ॥केतानकोठीतसाय॥लिष्याइ
तीचयं॥ ॥थवगमाचार्थवंताथावला॥एसव
सावासूषीनाहाव॥एसंमगीनलवपूकीव

हीनमस्यामीव्हायाउहस्कि॥थवगमाचार्थ
वंचलाथलाव॥एसवसत्वासूषीभावउ॥सा
नोविनाजीनेचवपूकी॥थमानमस्यामीव्हाया
उस्यस्किथवगमाचार्थवंताथावला॥एसवसत्व
सूषीभावउ॥गानानंमगीनलवपूकीव॥

नमस्या मी ॥ ह्रा यीउ सस्कि ॥ डा नि द्र वृ ता ना मी स मा
ग ता ना स्ता मा नि स्त्र मा व ग वा, प वी त्र मु ख नु मै त्र व्या
स्त्र दे वा ॥ श्व ना मी च व ल नु ध र्मी ॥ ॥ ॐ ज्ञा ह्र वा द्र
क व र्त्त क, दा न प ती ज थ्र ता ना मी, ध्र न य ए ॥ भ्र्या ह्रा द्र
ग न च क्र ॥ ॥ ह्रू ती य ह्रा क्री आ व लि स म य ॥ ॥

ती ष्ठ तो ॥ ॥ स्रा ह्रा ॥ ॥ क्र ॥ ती भा ष्या क्र ती ॥ स्त्र ना पा ठ ॥ ॥
क न न स क ल ती त्र क्रो ॥ थ न ग्र ह्र प्त्रो ॥ द क्षी ण म ॥
स ग्र न ॥ भो ज नि, क्रो भ ती र क ॥ ज्ञा भि चा र ॥ भा ल्या
ल व ना ॥ ह्र ल ना वी स ज न ॥ क ल भ ह्रा स्क न सि द्ध मं
क्र म ड पा ना स म स्त लो क ज्ञा भ ह्र णो ॥ ॥ क्र मा ना ह्र डा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वँ हुँ मँ मनिवज्री व वज्रावथ यौं॥ वज्रसत्व आ॥
सफ्वोन ता॥ नतोवाद भ्यो ल्पुम न.क्व सर्व स्व प्रयतक्व सा
स न॥ ॥ॐ न ठ्व श्रूं म मक्तोकू भ्रदीवा प्रवी तावुश्च द व ता श्वूद
वर्म्म सप्य न ता श्पथी वीजा न द ना ग श॥ सर्व वी ल्यू भ्रानिकू व न्नु स्वा
स्क ल्वा ल्ला॥ ॥थ न सि नें का पूजायाडाव॥ कुस तयी॥ ॥क्व ल्न तय॥
सा ल्ला भावूद श्च्छयान्नु सर्व. स्व द नूजी न सूल ता श्व वा ग न्प स ला वु सम्मा

या स्ला क पाला. स्व सू त दिव सू ग. श्व व ता ती श स भ ता भ्रीं ता क ल्या
न षी का स क ल ज न पदि ता ल न ज्ञा र्थ ना या पूजा ग ल्ला न्नु भा न्क्रि वी
श्व द नु यय गी श्च न्नु. जा ग क यह्रूं॥ ॥श्व न॥ पा ता न गी स्कृ तं वी
या. पा श्च ज्रि व त न म्म श्व नु॥ स्व त न ज्ञ घ श्व स्य नु. ज्ञा न श्व स्य त थ ता
न ग॥ ॥मा ल्ला त न त द र त्री ग्र श्च ा श्व ल न ल्ला त न॥ य ता न क ठि श्व स्य
नु स फ म पदि की र्ति त॥ र व स्ला क न्ना ती श ल्ल नु. नु व ल्ला क्ष न्न

स्कथा॥ स्वाहा कोयक्सव्य स्क. मक्ष्लोक ठुवक्षसि॥ डान लोकंक्षु
दम. ग पक्षाकंन लाढ स्क स्व श्लोक व मुड़ि स्क ठुव नानिव ठुइर्ध्व॥
आ पा. पैं॥ ला. मुकुदि ग पूजा॥ ख्ण्डादि आवाहान मूडा॥ कुंन भावडा
स्वादिभि रवडा पालन रुद्र स्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ ब्रह्मणे कपाल डण्डाय
हृम्शिखि मालिवीर पाक्ष स्वाहा॥ आग्ने॥ ॐ यमायं स्वाहा॥ याम॥ ॐ
ॐ सवरू ण तयंकन कूवर स्वाहा॥ नैर्ऋत्ये॥ ॐ त्र यूढ ष्ट्र खड्ग मालिवा

रूपाय रु स्वाहा॥ वायव्ये॥ ॐ सू मस्त्र वस्त्र रु स्वाहा॥ वायव्या॥ ॐ ध्व ना
धिग म न दाय आ गच्छ ध्व नाय स्वाहा॥ उदीं॥ ॐ ईं ईं ईं ॐ भीन स्वाह
रू भ्म ने॥ ॐ ऊर्ध्व ब्रह्मणे प्त य रु स्वाहा॥ ऊर्ध्व॥ ॐ आ रु सर्व्वा य ब्रह्म
प ण स्वाहा॥ वाम॥ ॐ आ सद्याय नरधि प ण स्वाहा॥ सद्या॥ ॐ अव प्र
धि ये रु वम्बवे स्वाहा॥ सुख॥ ॐ ना ण य रु स्वाहा॥ ॐ य मा यया
दी॥ पै. ला. मुकुदि॥ खण्ड सू न पताका नवडेल स्वा मालिवा रु॥

ॐ नमो सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्ताय स्वाहा ॥ १ ॥ नित्य उद्योतकारी महातपो दीप्ततपो महातपो घोरतपो घोरगुणतपस्वी महामुनीनां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं ॥

कुमन्यूरक्तसूत्रसामर्नं. नमामीहं॥८॥नागसीतव
सैकर्ङ्, पद्मनागसमप्रतसफाश्चनथमूर्ध्वं, वज्रसूय्या
नमामीहं॥१०॥कुन्थुगुखागसकल्पदन्तपोकालीजीवीतं.
लसैवाहनसङ्गं. निष्प्रभकुंनमामीहं॥११॥पुरुषदत्ता
यक्षेश्वर्व, अूमतंपुनसंङ्गकासवागेकनेकवर्ण्णता. पद्मासं
नंनभमुर्ध्वं॥१२॥नागराजागुवलकृतागवीकरकाया

पद्मायनीसमाख्यु न. सरवनागयक्षनभासकु॥१३॥गुना
सनसूनसलखगैरुढकेशवीनं।श्यामवर्णंसताकाय
व्यामशीतायुषेनम॥१८॥इतिश्लोकपानपूर्त्ती॥ ॥का
लीपूजा॥ध्यानंनेपूजोदान. धूपूतांक्षीसतयक्षपूसी
मतापूतसताया॥सीमतापूतक्षायकं॥सरवय॥ॐसर्व्वयातसे
र्व्वेभ्यपक्षेभ्यसर्व्वइषुवीघ्रमानंनहूँफट्॥ॐतारुतांक्षि॥ ॥

तला मादावाक्ष ॥ ॐ अघवा नाक ल्य वैन स्व तमन्य तपकलीय
गठ नथ खल्लू जा सू द्वीप हिम पा श्व भू की रठ ति मा नया दक
ल पा स्व र्भ ख पर्व त स मी प श्री स्व या का न म न्तु स्व डप क्षु ल्ली
त रठ ति ग म प स्व प र्व त श्री स्व य रू वै ल थ स न, अ ॐ वै ना ग स
नि ख न, न पा न श्व भ वा ग म ली प र्व कु न श्री वि र पा रू ख त नि को
श्वि न ख ग न ना श्री ग च्छ थो ग श्व ना न रू क न र्प श्व प ती स

नि ख न ॥ ॐ अ घ्र × ॥ ॐ त न घ ना श्म इ स्व ना श्व स्क प्र क र म्ल
का ४ क को लि ब्रू त य ल्ल, ग प रू व त दी र्घ श व रू ज्ञा न, क नि ष्ठ
का रू ल्ल दी र्घ श्री न म व्रू क ख ाय का र्ष नी धे न ना भि, वी न व
य्य न स व्य ना डा दि य ल्म स्थि ना, प त न क ल ल ४ क्षँ ॥
ॐ प्र ज्ञा ल ल ४ क्षँ ॥ त ता स्व स्ति वाक ॥ स्व स्ती व क्रू त ४ व्
ड स्व स्ती द वा श्व भ स कु का ४ स्व स्ति स र्वा णि दू ता नि, स र्व का

लीताभनुलावृद्ध पूर्वानूतावान, दृश्वतानामतनत्व। थाथाइथ
समस्तीप्रनासक्ष दोइर्थस्यस मश्चतीं॥ स्वस्मिवाडीपदीतान्छ
स्वस्कीवातुत्व पदा॥ स्वस्कीवाव्रजतामार्गस्वस्मिपुत्यागतंसूव
स्वस्कीनातोस्वस्कीमूव्यदिनस्तोस्वस्कीसर्वसमस्तोनाठ, मर्ववू
दादीमनुना॥ सूर्वठस्वस्कीवीरीनुमर्यषापापूम्मागमता।
सर्वेसत्वाःसर्वेप्राप्मःसर्वेरतासर्वेनलाः॥ सर्वेदेसुखीनः

समुमानस्थिपापूमागमदा॥ सर्वेदोक्षसकल्यानि, सर्वेन
रेतराडका। सर्वमदृद्धिकादूरा, सर्वेसत्वानिनाभय॥ अन
नस्वस्मिवाकाने, स्वस्किरतन्समंतता।यालोकरतानास्तीतानां
समगतानि तमोरथवानाशिरु, कूवनुमैत्रीलतांप्रजासूदि
वृत्तार्थसूचनानुधर्म्मः॥ ॥तथाधेनानातत्रकलीतस्यिमस्य
पैकानर्डजान, पर्ज्ञमानंधगइपतीर्डजाग्रिमनुलमंकाना तर्व

पीतवर्णं भीममुखं । वरदंडवामभद्रमुद्रकमण्डलुधरं सर्वाभरण
दारुमालाभरणं द्वीपासनसंस्थितं ध्यायेत्तं यक्षेंद्रवीर्यं ।
मकुटकुंडलहारकेयूरसंयुक्तं भोगिनं ॥४ ॐ ह्रीं श्रीं
समयाकृष्टिमावाहयामि स्वाहा ४ ॐ ह्रीं श्रीं मातृसंयुक्त, सर्वविघ्नविनाशन
यक्षेंद्रवीर्यसंपन्न सर्वसौख्यप्रदायक इहागच्छ इहागच्छ संवौषट् ॐ णमो
णं नक्षत्रनाथाय स्वाहा ॥ ॐ णमो णं ४ दंडकीलाय दं ४३ ॥ दक्षीण

म
ङ्कुशाय आकृष्टि ॥ प्रोक्षणाय ॥ ॥ आकर्षणाय ॥ धूपवाक्य
ॐ कारस्वरूपसमस्तात्मकस्वरूपसर्वसौख्यदायक इहागच्छ इहागच्छ
संवौषट् ॐ णमो णं नक्षत्रनाथाय ॥ ॥ ह्रीं नक्षत्रादिमध्यांतकरणसमर्थ
षडंगसहितवज्रमय ॥ ॥ ह्रीं नक्षत्रादिमध्यांतकरणसमर्थ
हिमदग्धसर्वपापनिर्दग्धमोक्षप्रदायक इहागच्छ इहागच्छ यमाय
पितृनाथाय स्वाहा ॥ ॥ ॐ णमो णं ४ दंडकीलाय दं ४३ ॥ दक्षीण

ख्यानं तथ्यानंवुद्धवदनानारीमध्यस्थीतंपद्मखड्गादयो
देवताः॥पद्मखड्गक्रमध्यस्थं, वीजऊँकारसंस्थंनादवी
दुक्तात्तं, वीजिनानानामवीजिनः॥ ॥ऊँअंग्रंयेदीप्ता
दीप्तावीजवीजमलाश्रीयंतत्वयकृत्व, वातनायहृध्यायःहूँ
वंहोःसमयस्तूमीतो॥नीलाङ्कन॥ऊँवजतरुहूँ॥सूर्यवे
ऊँवजयक्षदीप्तेस्वंत्व॥ ॥ऊँअंग्रंयप्रवनथक्षोभायअं

पृथ्वीवीजःस्वाहा॥पृथ्वी॥ ॥ऊँअंग्रंपृवथक्षोभायःपाम्
वमनेजोनंहःस्वाहा॥वके॥ ॥ऊँअंग्रंपृवनथक्षोभायःआक्ष
मंपृथ्वीवीजःस्वाहा॥सर्वगंठ॥ ॥ऊँवडाँडाभा॥२॥समयाश्र
ग्नेप्रवेस॥ऊँसवतथागुतकृयवीभावेयंसवमंहूँस्वाहा॥प
कमूगन्धि॥ ॥ऊँहौंठौंजौंअंःअभाजपनीभूद्रुभावयधिभा२
भुवसघोमतापश्चंहूँवंजीजीस्वंहूँकुरुस्वाहा॥पंचगव्य॥
पूषा न्यास॥

ॐ ह्रां यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं लिं स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं लिं स्वाहा ॥
ॐ ह्रैं कालाग्नि स्वाहा ॥ ॐ ह्रौं मनोन्मनाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रः सर्वभूत दमनाय
स्वाहा ॥ ॐ ह्रां पृथ्वी रूपाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नि रूपाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं वायु रूपाय
स्वाहा ॥ ॐ ह्रैं आकाश रूपाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रौं सर्वात्म रूपाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रः
ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वर सदाशिव रूपाय स्वाहा, ॐ ह्रां नमो भूताय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
ठः ठः, ठाकिनी कुलालि ॥ ॐ ह्रूं अरुणाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रैं पुरुषमनुरूपाय

ठाकिनी ठाकिनी ॥ ॐ ह्रौं अनन्ताय नमः ॥ ॐ ह्रः समयाग्नि ॥ ॥
यजनायक ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ ॥ की आज्ञके ॥ ॐ सर्वपापदहनाय
स्वाहा ॥ सर्वपापदहन स्वाहा ॥ प्रतिवसु सोमादी ×
तृप्तादी × ॥ पोषणा ॥ तीक्ष्णि मूर्ध्वकाय ॥ ॐ
हलप्रभा ॥ क्षिप्रकवडवी तोय ॥ डाकिनी ॥ नमो नवद्वि मूर्ध्व
वक्त्र ॥ स्वमन्त्र ॥ श्री सोपचार कृतीदयाम् ॥ तर्पणा ॥

प्रारुणसङ्गम्ष्ठ. पाघ्यादासु वापथत्॥ मही जूघ
तनी दघीत, वर्कीनाघमनेतथा॥ मर्घडव्यमूखगले. हृदी
ध्यनसीपूघ्युकं॥ तरुलाकदिकंहृत्. जालाद्यावूपनेतथ
समिहकोलाकंसघ. घृतायीदापनेपूनः॥ भैक्षघ्रीवत्सल
पेत. पूजनेकषूवत्सलः॥ हमीरुतवावर्हनि. सितातिलप
पापहृ. ध्यानिनकृत्. सीदार्थीवलवहीकसूवीपलीम
षयवार्यगदःकसुलादवावहनं. सूक्ष्मसीपत्राभ्यलो
ध्यान्यकं. गावेयमभ्युनिलगदःसूक्ष्मलघ्वीलहनेश्व
ष्ठेकृत्॥ मेजोवर्द्धकोसमांसघ्यपयःप्रकृष्टघ्रदेसंख्य
दं. सीतागमादिदलघुः. सलिलजंकुन्द्रीपूषाकमी॥
दीपाकिपवहनो. दधिगुजनचापीसीतागयदेइवीयु
वलवहनिसकलसपत्राकंबायकीतामूलघनदम्

चन्दनगन्धलक्ष्मीप्रदेभ्यो भ्यनेभ्यो स्वाहा सीद्धप्रयाइनिलस
येलक्षपर्णेभ्यो मूर्द्धिजमजावीपतीनहोतीदधाभूता
नामपमाखेभ्यो साहिवीवद्यनिसूनगर्भेभ्यः सूनगर्भेभ्यः सीसवी
तादेवता॥ ॥ॐयंनापतीलिफनसमिधंपतीभ्यो
वेय॥मभ्यनाभ्यांतीसिम्यक्।इकयात्सवडग्निनम॥
ॐअःस्वाहा॥श्यावनम॥ ॐअगृथ्यस्वाहा॥चनहय॥
चतापतीभ्यो नसवसमिधंइकयात्॥ ॥समीवइय

ॐअर्कायस्वाहा॥अर्कासी॥ ॥ॐआमायस्वाहा॥पत्ता॥
ॐवडागमनायस्वाहा॥खदीर॥ ॥ॐवडवूधायस्वा
हा॥अपामार्ग॥ ॥ॐआगमस्वतयस्वाहा॥अश्वत्थ॥
ॐअभ्याकमायस्वाहा॥अभगंधा॥ ॥ॐवडाकुव
ाअेस्वाहा॥वनसी॥ ॥ॐवडायक्लायस्वाहा॥डइम्बर
ॐवडादालिकायस्वाहा॥दाम्बर॥ ॥ॐवडावकुताक
यस्वाहा॥वकुल॥ ॥ॐवडाश्यनिधनायस्वाहा॥सन्धिकर्

ॐवज्रवाग्विवरायस्वाहा॥अस्त्रस्य॥ ॥ॐवज्रजल्पायस्वाहा॥पीताग॥ ॥ॐवज्रवीजायस्वाहा॥ब्रह्मतनू॥ ॥ॐ
ॐवरुणायस्वाहा॥वरुण॥ ॥ॐमधूनस्वाहा॥मधूकाय
ॐमधूकस्वाहा॥मधूक॥ ॥ॐजृम्भकायस्वाहा॥जृम्भक॥
ॐसर्वयक्षप्रभनायस्वाहा॥वैकंक॥ ॐ॥सर्वयोगप्रभ
नायस्वाहा॥निगकैन्ठ॥ ॥ॐसर्वेभ्यप्रभनायस्वा
हा॥कन्थगामी॥ ॥ॐवज्रसहकायस्वाहा॥जाहुन॥

ॐवज्रचूतायस्वाहा॥चूत॥ ॥ॐनिचूतकायस्वाहा॥निचूत
ॐकदम्बायस्वाहा॥कदम्ब॥ ॥ॐसर्वआरडायस्वाहा
गस्तान॥ ॥ॐवज्रलीलातीकायस्वाहा॥लीलातीका
ॐवज्रपीतनुतस्वाहा॥पीताकी॥ ॥ॐवज्रकुकुसायस्वा
साल्लीध्यनकैन्ठ॥ ॥ॐवज्रवलायस्वाहा॥सिद्धसी॥ ॥
ॐवज्रप्रीयाकमायस्वाहा॥प्रीयंगु॥ ॥ॐवज्रमदनायस्वा
हा॥मदनकैन्ठ॥ ॥ॐकीलाप्रीध्यतस्समोवि॥ ॥

ॐ जृं प्रणीहृत वज्रे स्वाहा ॥ कं ॥ ॥ ॐ वज्रावृषि स्वाहा
ईशीकृतु ॥ ॥ ॐ वीमलेभृंखसंभुङ्क्ष्व निर्मलेजल
पृक्षितेदृश्यनष्टास्तुतागच्छ्यथेष्टंभुङ्क्ष्वयथेच्छ्यन
मान ॥ ॐ सर्व व्रीहीङ्कीं भ्रां ४ कुरुं स्वाहा ॥ व्रीहीभवान
ॐ सर्वपापदहनवज्राय, सर्वपापदह २ स्वाहा ॥ कास ॥
ॐ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ जङ्घ ॥ ॥ ॐ वज्रवराय स्वाहा ॥ ॐ
ॐ वज्रचम्पायस्वाहा ॥ नङ्घ ॥ ॥ ॐ वज्रवीजाय

स्वाहा ॥ स्तनयो ॥ ॥ ॐ वीजोत्तमाय स्वाहा ॥ पृ
ॐ मत्तवनायस्वाहा ॥ मांस ॥ ॥ ॐ वज्रमृगमायस्वा
हा ॥ मृग ॥ ॥ ॐ वज्रकनायस्वाहा ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ वज्र
कोमाषपोल्लेस्वाहा ॥ कोमाष ॥ ॥ ॐ ज्रां ४ कुं सु
दमाषकस्वाहा ॥ उमास ॥ ॥ ॐ वज्रभ्रमावुं ॐ ज्रां कुं
स्वाहा ॥ हृतो ॥ ॥ ॐ कुंदमस्वाय ॐ ज्रां ४ कुंस्वाहा ॥ कं
मंगठ ॥ ॥ ॐ ज्रूं ४ कुंजूतसी कनायस्वाहा ॥ तासा

कृतीदघ्यात्॥ ॥ज्ञलधात्रा॥ ॥ॐ भूरग्नि सर्वे मृङ्गापा
धोसद्वगा प्रेजा ४ ॐ वं सोद्वं दृढ़ प्रवन्न सकाराय दृं दृढ़ स्वाहा
पंक्षपक्षान पड़ा॥ ॥आकृती॥ स्मिवकृता मूर्व त्पादी ।x
ॐ अरुथ दीप्ता दीप्ता वीषवीषमन्ता आयेहवकेवव हनाथा
ऊजमास्या पृष्ठे कृदृं स्वाहा॥मन्तु॥ ॥पं ला मन्तु॥क्षिता
प्रथमाकृती॥ ॥तताज्ञलनाकृता॥ ॥वद्र सोवेन॥ॐ ह्री
माग्नि र्नव वाधि नावन्नूर्क प्रस्तोक्ष। रिनाक्काक्ष स्तुम वृक्ता

नित्यृक्काभ्यलि। पं ह्रन्मातृगीमयाय सस्त्रीमनं हृ
सादीपाठनिताप्रतीपादनियं॥ ॥ॐवृजांऊं खे
दृं॥ॐदीक्षानक्षानप्रीनमस्वाहा॥ ॥तताववस्त्र
वेन॥ ॥तताव्हृंसावमन्तादीकृक्षा सकीकवे
ह्रानाग्निदीकाक्ष कोलाकालाग्नेयजाक्षद्रदी
कंमसर्वस्त्रसमाधगीमन्तुलाविपतीवीनेस्मनवी
ह्रावीजपतीन्नामंन्नमन्तु लाविपतीस्मानस्त्रयैवीकाक्ष

ज्ञानसत्त्वस्वडीकृत्याद्यावरणप्रवभाग्यद्धिभ्यो
ज्ञानात्मनिलयेवसमस्तसत्त्वसर्वेकृत्॥ ईशित्वाद्यष्टसिद्धयात्मक
ज्ञात्मनादीनांपूजामुद्राकृत्वाशेषयोगिनी॥ ॥दारुणया
वेशेन॥ ॥ॐघोरघोरतरमूर्तयेनाथदीर्घबलिपूजाघो
रास्त्रमुद्राद्वितीयंस्वमन्त्रंवदेत्कवचंहृदयमन्त्रं॥ॐहूंफट्॥
ॐमतीवक्रूरतीव्रदंष्ट्रादी॥ॐअस्त्रंस्वादी×॥ॐम्रियतामरिवीर्यंपू
जास्त्रंशिरोमन्त्रंदद्यात्॥ ॥अनादेवतीर्थमुद्राभक्तस्यदक्षिणेविन्य

देवतादक्षिणायाय॥ॐनमोदेवदेवायनीलघनमालाकंठायनम
नीलदंष्ट्रकरालायामडामरायसूर्यकोटिसमप्रभायत्रिनेत्रायत्रिशूलिने
वडाक्षमालादीधरायनग्नायत्रिजटाकलापायनानाभरणभूषितायनव
निसमप्रभायनीलवस्त्रपरिधानायनवयौवनसंपन्नायसर्वाभरणभूषि
तायनानाविधविलेपनायसर्वदेवनमस्कृतायनमस्तेस्तुभगवन्महाभै
रवनाथमहाकालभैरवकल्पोक्तेनविधिनामांरक्षरक्षमहाभैरवनाथ॥
बलिमुद्रांदर्शयेत्॥ ॥ततोदेवतायाःपुरतोमण्डलंपद्मसंस्थंवा
सर्वतोभद्रंवालिखेत्॥ ॥तत्रपद्मेकर्णिकायांपूर्वादिदलेषुक्रमेणा
ष्टौमातरःपूजयेत्॥ ॥ब्राह्मीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीवाराहीमाहे
न्द्रीचामुण्डाचण्डिकेतिक्रमेणाष्टौमातरःपूजयेत्॥ ॥तत्रपूर्वदले
ब्राह्मीपूजयेत्॥ॐब्रह्मायैनमः॥ॐब्राह्मीमावाहयामिस्थापयामि
पूजयामि॥ॐब्राह्मीदेवीइहागच्छइहतिष्ठसर्वान्कामान्मेदेहिस्वाहा॥

ऊर्ध्वं ग्रहणं इति सूत्रेण नैकान्त्यमवङ्गलपुमानभ्युक्तवर्जनीवा
वश्यमाङ्गलोक्तानवश्यके नवधूमूर्खश्रुताद्वीदचा ए
वंपुरुषार्थसूत्रीजावश्यि मूकीदाक्षप्रवृत्ता सावधक्ष्मा
नूनूपेन द्वेष्यमन्यादिकनयेते पाठीसङ्गवोपाय न
ध्रुवंहृदयेसाव नातोवीनिगतोसर्षिमहाक्षनाम्नर्तं
मैनं तेनसेनाप्यदेवा तस्मान्नसवनाचर्नं। ऽवैकशोती
यकामं सीदासीतागमसम्यदेतीसर्वैकवीभलादी
यावधनरकोडीश॥ सङ्कासीदीनूसापत्यमन्तकी
दीतामर्नं॥ ॥मरेदेसवादतीवीन्वधूदीसवादीवाधना
वरसवपतायाक्षउङ्गलाङ्गसिताननं॥ ॥नतादेव
ताभेषा॥ ॥नवेपअकृत्यादिपदाचेपक्षानाभे॥
ऊक्षस्कीवाकुतोवंहतोदीऽऊर्ध्वदाप्यदीपात्यादा
लास्यासुतीःस्तादानकंडीमवीभान॥ ॥पत्सी
तीयाश॥

ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं आवसुदलादीनां कुं नमदीमण्डलग
ताश्चसम्यूंछसम्यक्। वैश्रमनंसूगतसूनुसला
कपालानं, संतोषालब्धवीविनावलिभाषचनं॥ ॥
अथोपाद्य॥ वृषभाक्षीद्वयाचरद्वयासमावेअ
क्षादिपूर्वदेवयातृ॥ ॥ॐआंः समांविदलेअक्षलक्षा॥
समनसी॥ ॥ॐआंः दंगाभ्यांचतीवकंवीरूषल्ला

ॐस्वाहा॥श्रीखंशु॥ ॥ॐवजावसेस्वाहा॥जगम
ॐसूपूषासूकलवलज्ञानिथपूषिकूस्वा
हा॥पद्मोत्पन्न॥ ॥ॐवेर्म्मोवेर्म्मनाजडहरसर्व
वीद्यापुभ्यानिकूरस्वाहा॥चक्रनगूठी॥
ॐआंश्रींवजावेपेस्वाहा॥बू॥ ॥ॐअंवडाडीक
स्वाहा॥दिप॥ ॥ॐगंगमंगंगंमवीलाकीत

ॐ आं क्रों ह्रीं यं हूँ रः स्वाहा ॥ वायव ॥ ॐ वज्र तुण्डाय स्वाहा ॥ तुण्ड ॥ ॐ वज्रतीक्ष्ण दंष्ट्राय स्वाहा ॥ दंष्ट्रा ॥ ॐ सर्व भूत ग्रह समनाथाय स्वाहा ॥ सर्व ग्रह ॥ ॐ ठं ठं क्रोधाय कर्मनाशनाय स्वाहा ॥ क्रोध कर्म ॥ ॐ ठं ठं ठं ठं नमः आं हूँ स्वाहा ॥ ठं ठं ठं ठं ॥ ॐ मदनाय स्वाहा ॥ मदन ॥ ॐ वज्र वंशकराय स्वाहा ॥ कुल्ल ॥ ॐ सर्व नाक नाथाय स्वाहा ॥ भगवती ॥ ॐ वज्र वीर्याय स्वाहा ॥ सुक्र ॐ सर्व कर्म क्षयाय स्वाहा ॥ नाग कन्या ॥ ॐ वज्र मेदहूँ स्वाहा ॥ पद्म कुंभ ॥ ॐ सर्व योगिनी डाकिनी स्वाहा ॥ ॐ दह २ हूँ २ स्वाहा ॥ भिक्षु ॐ पचि २ स्वाहा ॥ गुरु नी ॥ ॐ समय जा नाथाय स्वाहा ॥ जूरु नी ॥ ॥ सर्व समय स्वाहा ॥ पद्म गज ॥

ॐ वज्र मीश्वरि सर्व सीद्धी कुरु हुँ स्वाहा ॥ चक्रवर्तीन ॥ ॐ वज्र २ सत्व कार्य सीद्धी [illegible] दे वाय स्वाहा ॥ चक्रचन्द न ॐ वज्र नि पी ठ मा र्य स्वाहा ॥ श्री रत्न ॥ ॥ ॐ वज्र दर्श न रत्ना य स्वाहा ॥ कौ ल कल ॥ ॥ ॐ वज्र न स्वा हा ॥ वश्य न सी ॥ ॥ ॐ सत्व पी वजा य स्वाहा ॥ रत्न स्था न ॥ ॐ वजा य रत्न स्वाहा ॥ इर्षी कल्प ॥ ॥ ॐ वज्र इर्ष्य कुं ॥ इर्ष्या ॥

ॐ वज्र पीक्क का ना य स्वाहा ॥ पीक्का ॥ ॥ ॐ ओं ३ कार स्वा हा ॥ मूर्त्ती ॥ ॥ स्त्री द्वी हृदय ॥ ॥ चतु हृदय ॥ ॥ तृतीय ॥ तृतीय ॥ मन्त्रावक्ता अर्द्ध डी ॥ मन्त्र ॥ ॐ ओं ३ कार वक्त त्र पत्नी भीष्या न तङ्ग २ कुं स्वाहा ॥ ॥ अभ नतु जाता वजीद्धा न वज्रि प्रतीकथ ॥ सीस्त्रता दीजा न नु ष्ठवा मी कलप्त हा ॥ १ ॥ पद्म न त्य श्वत मुष्ठ (तुष्ठ) वाडी वली पुना

ब्रह्मभद्रमस्त्रभ्यन्त। वीरूवायूमस्तावत्त ॥ १ ॥ कमर्दवा
तिनार्श्वन, वरुसूर्यतर्गन्धर्वाप्सरसकथ
वर्चेक्लप्तथ ॥ २ ॥ वेम्यनाजाव नागाश्व, गरु
डासूचवी नृना। क्रायन्तीभनीदवाश्व, जूकनिष्कनिवासी
नां ॥ ३ ॥ मस्तावाजाष्ठगायत्र, निवान्गद्रुभवाक्लप्तान

घा गनिदवाश्व क्षुभेवासाप गार्ध्व ॥ ४ ॥ मानवी
गोकभातुष वभ्रभातुनिवासानावदुद्वीपस्त्रीतासत्वा
स्त्रीतायवत्रीभातुकं ॥ ५ ॥ वाडनसवलोकाश्व, लग
गूरुमनुष्यादथाभूदीतानुमीस्त्रीतायवर्वीमत्तायोमती
स्कन्ता ॥ ६ ॥ लावनायोंकृतास्कन्ता, वेम्मभचानूसयव
इक्ष्याथागमाश्वय्यइनगलाश्वप्राफाश्व ॥ ७ ॥ प्रताक

[illegible] नाम नौ [illegible] वासुदेव का सत्व। सो वेमती
माय च, दसमा श्रमनाथ ॥ ६ ॥ ग्रा वीगमी
गनाय च, सत्व दूजा श्रावक का धर्म, ग गौतम स्वा
मी नौ [illegible] न नेक नाथ च, धर्म सुव्रत का ॥ ७ ॥
पानि नाम स्वामी नौ, ग गनाय च मत्स्य, दानवती
ड ड मा न × ॥ थ नौ, पेढ़ नाम वीरधर्म, वीर [illegible]
[illegible]
श्रमनाथ धर्म नौ कैसरी रंग मनाथ पूर्व धर।
ए सजाती या श्राश्रम ध्य पूर्व नौ सत्व गौत्र सूरा रंग
मनाथ पूर्व धर पूर्व नाम नौ [illegible] ॥ ॥ राजा
आता ॥ राजा वि गौड, पन्न श्च न, पन्न रंग
क सश्च ग्रा ड धर्म मडी न मल देव, [illegible]